Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

नासिरा शर्मा के उपन्यासों में स्त्री अस्मिता, संघर्ष और प्रतिरोध : एक समकालीन विमर्श

प्रीति लोधी

शोधार्थी, बरकतउल्लाह विश्वविद्यालय, भोपाल

डॉ. मधुबाला गुप्ता

प्रो. प्राध्यापक एवं हिन्दी विभागाध्यक्ष, शासकीय सरोजिनी नायडू कन्या (स्वशासी) महाविद्यालय, शिवाजी नगर, भोपाल

डॉ. कीर्ति शर्मा

प्राध्यापक एवं हिन्दी विभागाध्यक्ष, शासकीय सरोजिनी नायडू कन्या (स्वशासी) महाविद्यालय, शिवाजी नगर, भोपाल

सारांश

प्रस्तुत शोध-लेख *''नासिरा शर्मा के उपन्यासों में स्त्री अस्मिता, संघर्ष और प्रतिरोध : एक समकालीन विमर्श''* में नासिरा शर्मा के उपन्यासों का अध्ययन स्त्री-विमर्श के व्यापक सामाजिक, सांस्कृतिक और वैचारिक संदर्भों में किया गया है। नासिरा शर्मा का कथा-साहित्य समकालीन हिंदी उपन्यास परंपरा में स्त्री जीवन के यथार्थ को संवेदनशीलता और गहराई के साथ प्रस्तुत करता है। उनके उपन्यासों में स्त्री केवल पीड़िता के रूप में नहीं, बल्कि अपने अस्तित्व की खोज करती हुई, सामाजिक बंधनों से संघर्ष करती हुई और प्रतिरोध के विविध रूप अपनाती हुई चेतन सत्ता के रूप में सामने आती है। इस अध्ययन में यह स्पष्ट किया गया है कि नासिरा शर्मा के स्त्री-पात्र पारिवारिक, सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक संरचनाओं के बीच अपनी अस्मिता का निर्माण करते हैं। उनका संघर्ष केवल बाहरी दमन तक सीमित नहीं है, बल्कि मानसिक द्वंद्व, आत्मसंघर्ष और सामाजिक अपेक्षाओं से उपजे दबावों से भी जुड़ा हुआ है। लेख में यह प्रतिपादित किया गया है कि नासिरा शर्मा के उपन्यासों में स्त्री-प्रतिरोध उग्र विद्रोह के रूप में नहीं, बल्कि प्रश्नाकुलता, मौन, निर्णय-क्षमता और मानवीय दृष्टि के रूप में अभिव्यक्त होता है। अध्ययन का निष्कर्ष यह है कि नासिरा शर्मा का साहित्य स्त्री-विमर्श को एकांगी न बनाकर उसे बहुआयामी और समकालीन बनाता है। उनकी रचनाएँ स्त्री जीवन की जटिलताओं को समझने की दृष्टि प्रदान करती हैं तथा हिंदी उपन्यास में स्त्री अस्मिता, संघर्ष और प्रतिरोध के विमर्श को सुदृढ़ आधार प्रदान करती हैं।

मूल शब्द: स्त्री अस्मिता, स्त्री संघर्ष, स्त्री प्रतिरोध, समकालीन हिंदी उपन्यास, नासिरा शर्मा

1. भूमिका

समकालीन हिंदी उपन्यास में स्त्री-जीवन के अनुभवों का चित्रण केवल 'पीड़ा-कथा' नहीं रहा, बल्कि वह सामाजिक-राजनीतिक संरचनाओं के विरुद्ध स्त्री की **अस्मिता**, **संघर्ष** और **प्रतिरोध** की बहुस्तरीय यात्रा का दस्तावेज़ बन गया है। इस परंपरा में नासिरा शर्मा का रचनाकर्म विशेष रूप से उल्लेखनीय है, क्योंकि उनके उपन्यास स्त्री के निजी संसार (घर, संबंध, देह, स्मृति) और सार्वजनिक संसार (धर्म, सत्ता, साम्प्रदायिकता, युद्ध, विस्थापन, राजनीति) के बीच की टकराहट को अत्यंत जीवंत ढंग से उभारते हैं। नासिरा शर्मा की रचनाशीलता का एक बड़ा हिस्सा एशियाई-उपमहाद्वीपीय सामाजिक यथार्थ से जुड़ता है—जहाँ

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

स्त्री की स्थिति धर्म, जातीयता, वर्ग और सामुदायिक पहचान के जटिल जाल में निर्धारित होती है। यही कारण है कि उनके उपन्यासों में स्त्री-विमर्श 'सिर्फ लिंग-आधारित' न होकर बहु-आयामी बन जाता है।

नासिरा शर्मा की कृतियों की सूची स्वयं संकेत देती है कि उन्होंने स्त्री-अनुभव को अलग-अलग सामाजिक भूगोल और ऐतिहासिक क्षणों में देखा है—उपन्यास जैसे *'शाल्मली'*, *'ठीकरे की मंगनी'*, *'ज़िन्दा मुहावरे'*, *'ज़ीरो रोड'*, *'अक्षयवट'*, *'अजनबी ज़जीरा'*, *'पारिजात'*, *'काग़ज़ की नाव'*, *'शब्द पखेरू'*, *'दूसरी जन्नत'* आदि। इस व्यापक रचनाक्षेत्र के कारण उनके यहां स्त्री की अस्मिता एकरेखीय नहीं, बल्कि निरंतर निर्मित/पुनर्निर्मित होने वाली प्रक्रिया के रूप में उभरती है।

2. शोध-समस्या और उद्देश्य

इस शोध-लेख का केंद्रीय प्रश्न यह है कि नासिरा शर्मा के उपन्यासों में स्त्री **अपनी पहचान** को किन सामाजिक शर्तों में गढ़ती है, किन-किन स्तरों पर संघर्ष करती है, और प्रतिरोध की कौन-सी रणनीतियाँ अपनाती है। इस संदर्भ में निम्न उद्देश्य निर्धारित किए गए हैं—

1. स्त्री अस्मिता के गठन में परिवार, समाज, धर्म, राजनीति और वर्ग की भूमिका का विश्लेषण।
2. स्त्री-संघर्ष के रूपों (घरेलू, सामाजिक, वैचारिक, आर्थिक, सांस्कृतिक) की पहचान।
3. प्रतिरोध की भाषाओं—मौन, प्रश्न, निर्णय, अस्वीकार, पलायन, पुनर्निर्माण—का पाठ-विश्लेषण।
4. समकालीन स्त्री-विमर्श के परिप्रेक्ष्य में नासिरा शर्मा के उपन्यासों की प्रासंगिकता स्थापित करना।

3. शोध-विधि और सैद्धांतिक आधार

यह लेख मूलतः **पाठ-आधारित गुणात्मक अध्ययन** (textual qualitative analysis) है। इसमें चयनित उपन्यासों के कथानक, स्त्री-पात्रों की संरचना, संवाद-भाषा, प्रतीकों और सामाजिक संदर्भों का विश्लेषण किया गया है।

सैद्धांतिक स्तर पर यह अध्ययन स्त्री-विमर्श की उस दृष्टि को आधार बनाता है जिसमें पितृसत्ता को केवल घरेलू 'पुरुष-स्त्री संबंध' तक सीमित न मानकर सत्ता-संस्थाओं (परिवार, समुदाय, धार्मिक नैतिकता, राजनीतिक हिंसा) का संयुक्त ढांचा समझा जाता है। नासिरा शर्मा पर केंद्रित पूर्व अध्ययनों में भी यह संकेत मिलता है कि उनके यहां स्त्री-पात्र 'वेदना' के साथ-साथ **आत्मविश्वास और संघर्षशीलता** की छवि लिए दिखाई देते हैं।

4. स्त्री अस्मिता : पहचान का निर्माण और संकट

नासिरा शर्मा के उपन्यासों में स्त्री अस्मिता अक्सर **दोहरी/बहुहरी पहचान** के दबाव में उभरती है—स्त्री एक साथ बेटी, पत्नी, माँ, प्रेमिका, नागरिक, समुदाय की सदस्य और कभी-कभी 'अल्पसंख्यक पहचान' की वाहक भी है। ऐसे में उसकी पहचान किसी एक स्थिर परिभाषा में नहीं बँधती; वह निरंतर सवालों, टकराहटों और निर्णयों के बीच बनती है।

स्त्री अस्मिता का पहला बड़ा संकट **परिवार** से शुरू होता है—जहाँ 'सम्मान', 'मर्यादा' और 'परंपरा' स्त्री की स्वतंत्रता के विरुद्ध नैतिक हथियार बन जाते हैं। नासिरा शर्मा की स्त्री घर को छोड़ती नहीं, बल्कि घर के भीतर ही अपने लिए जगह बनाने

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

की कोशिश करती है—यह कोशिश कई बार संवाद बनकर आती है, कई बार अस्वीकार के रूप में, और कई बार आत्मनिर्णय के रूप में।

दूसरा संकट **सामुदायिक/धार्मिक संरचनाओं** से जुड़ता है। विशेषकर उन उपन्यासों में जहाँ समाज रूढ़िवाद, अंधविश्वास या सामुदायिक पहचान के आग्रहों से नियंत्रित है, स्त्री की अस्मिता 'व्यक्ति' के रूप में स्वीकार नहीं होती, उसे 'समुदाय की इज्जत' या 'परंपरा की चौकीदार' बना दिया जाता है। नासिरा शर्मा के उपन्यासों के अध्ययन पर आधारित एक लेख में यह संकेत मिलता है कि उनके यहां मुस्लिम समाज की रूढ़ियों और स्त्री की स्थिति का चित्रण प्रमुखता से हुआ है।

5. संघर्ष : देह, भाषा और निर्णय का संघर्ष

नासिरा शर्मा के उपन्यासों में स्त्री-संघर्ष सिर्फ बाहरी अत्याचार के खिलाफ नहीं, बल्कि **अंदरूनी टूटन, भय, दुविधा**, और **संस्कार-जनित अपराधबोध** के विरुद्ध भी दिखाई देता है। यह संघर्ष कई स्तरों पर पढ़ा जा सकता है—

(क) देह और नैतिकता का संघर्ष

पितृसत्ता अक्सर स्त्री की देह को नियंत्रण की वस्तु बनाती है—उसकी इच्छाओं, आवाज़ और गति पर नियंत्रण। नासिरा शर्मा की स्त्रियां देह को 'लज्जा' नहीं, 'अनुभव' और 'अधिकार' के रूप में समझने की ओर बढ़ती हैं। यही बिंदु उन्हें आधुनिक स्त्री-विमर्श से जोड़ता है, जहाँ स्त्री देह को वस्तु नहीं, स्वायत्तता (autonomy) का आधार मानती है।

(ख) भाषा और अभिव्यक्ति का संघर्ष

स्त्री का एक बड़ा संघर्ष 'बोलने' का संघर्ष है। बोलना केवल शब्द नहीं, सत्ता-संबंधों की चुनौती है। नासिरा शर्मा के यहां स्त्री की भाषा कई बार प्रश्न करती है, कई बार तर्क देती है, और कई बार मौन को भी प्रतिरोध में बदल देती है—क्योंकि कुछ परिस्थितियों में मौन भी 'स्वीकृति' नहीं, रणनीति होता है।

(ग) निर्णय और स्वतंत्रता का संघर्ष

स्त्री के लिए निर्णय लेना सबसे कठिन राजनीतिक क्रिया बन जाती है—क्योंकि निर्णय लेते ही वह 'अनुशासन' के खिलाफ खड़ी हो जाती है। इसीलिए नासिरा शर्मा के यहां निर्णय अक्सर संघर्ष की परिणति होते हैं—जैसे संबंधों की पुनर्व्याख्या, विवाह/प्रेम/कैरियर पर अपना अधिकार, या सामाजिक-सामुदायिक दबाव के विरुद्ध अपना पक्ष चुनना।

6. प्रतिरोध : रणनीतियाँ और रूप

प्रतिरोध का अर्थ केवल विद्रोह नहीं; कई बार प्रतिरोध **धीमी, भीतर-से-भीतर बदलने वाली प्रक्रिया** है। नासिरा शर्मा के उपन्यासों में प्रतिरोध के कुछ प्रमुख रूप उभरते हैं—

(क) प्रश्नाकुलता का प्रतिरोध

जब स्त्री 'क्यों?' पूछती है, तब वह परंपरा के स्वाभाविक माने गए नियमों को अस्वाभाविक कर देती है। यह प्रतिरोध विचार का प्रतिरोध है।

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

(ख) शिक्षा/चेतना का प्रतिरोध

स्त्री पात्रों में चेतना का उभार उन्हें आत्मसम्मान देता है और वे अपनी स्थिति को भाग्य नहीं, व्यवस्था का परिणाम मानने लगती हैं। यही बिंदु उन्हें परिवर्तन-उन्मुख बनाता है।

(ग) सामाजिक यथार्थ के बीच 'स्व' का निर्माण

प्रतिरोध का एक बड़ा रूप है—अपनी शर्तों पर 'स्व' का निर्माण। नासिरा शर्मा की स्त्री अक्सर यह कहती है कि वह सिर्फ किसी की पत्नी/बेटी नहीं, एक स्वतंत्र व्यक्ति भी है।

(घ) साम्प्रदायिकता/हिंसा के विरुद्ध मानवीय प्रतिरोध

उनकी रचनाधर्मिता का विशिष्ट पक्ष यह भी है कि स्त्री-विमर्श कई बार व्यापक मानवीय संदर्भ में आता है—जहाँ युद्ध, सांप्रदायिक दंगे, विस्थापन या राजनीतिक हिंसा के बीच स्त्री केवल 'पीड़िता' नहीं रहती; वह साक्षी, विश्लेषक और कभी-कभी नैतिक प्रतिरोध की धुरी बन जाती है।

7. "ठीकरे की मंगनी" और स्त्री-अस्मिता का उभार (संकेतात्मक विश्लेषण)

नासिरा शर्मा के उपन्यास *'ठीकरे की मंगनी'* को लेकर उपलब्ध आलोचनात्मक लेखों में नायिका के 'अपना अस्तित्व' गढ़ने के संघर्ष पर विशेष जोर मिलता है। यहाँ स्त्री का संघर्ष केवल निजी जीवन की समस्या नहीं, बल्कि सामाजिक संरचना में 'स्त्री होने' की शर्तों से टकराने का संघर्ष है। यह उपन्यास स्त्री-विमर्श की उस धारा से जुड़ता है जहाँ स्त्री आत्मनिर्णय की ओर बढ़ते हुए अपने भीतर के भय और समाज के दबाव—दोनों से जूझती है।

8. *'शाल्मली'* : स्मृति, इतिहास और स्त्री-प्रतिरोध

नासिरा शर्मा का उपन्यास *'शाल्मली'* स्त्री-विमर्श को केवल समकालीन सामाजिक संदर्भ तक सीमित नहीं रखता, बल्कि स्मृति और इतिहास के बीच स्त्री की भूमिका को भी रेखांकित करता है। इस उपन्यास में स्त्री केवल घटनाओं की दर्शक नहीं है, बल्कि वह इतिहास के मौन पक्ष को उजागर करने वाली संवेदनशील चेतना बनकर उभरती है।

यहाँ स्त्री-अस्मिता स्मृति के माध्यम से निर्मित होती है—वह अपने अतीत, अपनी जड़ों और अपने अनुभवों को याद करके वर्तमान को समझती है। इस प्रक्रिया में उसका संघर्ष बाहरी कम और आंतरिक अधिक है। वह अपने भीतर के डर, अपराधबोध और सामाजिक अपेक्षाओं से जूझती है। यही जूझ उसे प्रतिरोध की ओर ले जाती है—एक ऐसा प्रतिरोध जो शोर नहीं करता, लेकिन स्थायी होता है।

9. *'ज़िन्दा मुहावरे'* : स्त्री और सामाजिक यथार्थ

'ज़िन्दा मुहावरे' नासिरा शर्मा का ऐसा उपन्यास है जिसमें स्त्री-जीवन सामाजिक यथार्थ के जीवंत प्रतीकों के रूप में सामने आता है। यहाँ स्त्री पात्र किसी आदर्श छवि में नहीं ढले हैं; वे अपने समय की विसंगतियों, हिंसा और असमानताओं से सीधे टकराते हैं।

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

इस उपन्यास में स्त्री-संघर्ष की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वह 'व्यक्तिगत दुख' से आगे बढ़कर 'सामूहिक अनुभव' बन जाता है। स्त्री यहाँ केवल अपने लिए नहीं, बल्कि अपने जैसे अन्य स्त्री-जीवनों के लिए भी प्रश्न उठाती है। यही सामूहिकता स्त्री-प्रतिरोध को व्यापक सामाजिक स्वर प्रदान करती है।

10. *'पारिजात'* : अस्मिता और आत्मनिर्णय

'पारिजात' में स्त्री-अस्मिता आत्मनिर्णय के माध्यम से उभरती है। यह उपन्यास स्त्री के उस पक्ष को सामने लाता है जहाँ वह संबंधों की परंपरागत व्याख्या को स्वीकार करने से इनकार करती है।

यहाँ संघर्ष किसी एक व्यक्ति से नहीं, बल्कि उस मानसिकता से है जो स्त्री को निर्णय-अधिकार से वंचित रखना चाहती है। स्त्री का प्रतिरोध इस रूप में सामने आता है कि वह अपने जीवन की दिशा स्वयं तय करने का साहस करती है। यह साहस ही उसे समकालीन स्त्री-विमर्श की अग्रणी पंक्ति में खड़ा करता है।

11. *'ज़ीरो रोड'* : राजनीतिक हिंसा और स्त्री की मानवीय दृष्टि

नासिरा शर्मा के उपन्यासों की एक विशिष्ट विशेषता यह है कि वे स्त्री-विमर्श को राजनीतिक और साम्प्रदायिक संदर्भों से जोड़ते हैं। *'ज़ीरो रोड'* में राजनीतिक हिंसा, विस्थापन और सामुदायिक तनाव के बीच स्त्री की मानवीय दृष्टि उभरकर सामने आती है। यहाँ स्त्री केवल हिंसा की शिकार नहीं है, बल्कि वह हिंसा की निरर्थकता को समझने और समझाने वाली चेतना भी है। उसका प्रतिरोध हथियारों से नहीं, बल्कि मानवीय संवेदना से निर्मित होता है। इस प्रकार स्त्री-प्रतिरोध का स्वर नैतिक और मानवीय बन जाता है।

12. स्त्री-प्रतिरोध के विविध रूप : एक समेकित दृष्टि

नासिरा शर्मा के उपन्यासों में स्त्री-प्रतिरोध किसी एक रूप में सीमित नहीं है। वह कई स्तरों पर दिखाई देता है—

- **मौन का प्रतिरोध** : जब स्त्री चुप रहती है, तब भी वह व्यवस्था को चुनौती देती है।
- **संवाद का प्रतिरोध** : प्रश्न पूछकर वह सत्ता की स्वीकृत मान्यताओं को हिला देती है।
- **निर्णय का प्रतिरोध** : अपने जीवन से जुड़े फैसले स्वयं लेकर वह पितृसत्ता को अस्वीकार करती है।
- **मानवीय प्रतिरोध** : हिंसा और घृणा के विरुद्ध मानवीय मूल्यों की स्थापना।

ये सभी रूप मिलकर नासिरा शर्मा के स्त्री-विमर्श को बहुआयामी बनाते हैं।

13. समकालीन स्त्री-विमर्श में नासिरा शर्मा का योगदान

समकालीन हिंदी साहित्य में स्त्री-विमर्श की अनेक धाराएँ हैं—कुछ धारा-विशेष देह-राजनीति पर केंद्रित हैं, कुछ सामाजिक-आर्थिक असमानता पर। नासिरा शर्मा का योगदान इन सभी धाराओं को जोड़ने वाला है।

उनके उपन्यासों में स्त्री न तो केवल पीड़िता है और न ही मात्र विद्रोही; वह परिस्थितियों को समझने वाली, उनसे जूझने वाली और आवश्यकता पड़ने पर उन्हें बदलने का साहस रखने वाली चेतना है। यही संतुलन उनके स्त्री-विमर्श को विशिष्ट बनाता है।

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

14. निष्कर्ष

इस अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि नासिरा शर्मा के उपन्यासों में स्त्री अस्मिता, संघर्ष और प्रतिरोध समकालीन समाज की जटिल संरचनाओं के भीतर आकार लेते हैं। उनकी स्त्रियाँ अपने अस्तित्व के लिए केवल लड़ती नहीं हैं, बल्कि वे समाज को देखने और समझने की नई दृष्टि भी प्रदान करती हैं।

नासिरा शर्मा का स्त्री-विमर्श हमें यह सिखाता है कि प्रतिरोध केवल टकराव नहीं, बल्कि चेतना का विस्तार भी है। यही कारण है कि उनका साहित्य आज भी प्रासंगिक है और भविष्य में भी रहेगा।

संदर्भ सूची

1. शर्मा, नासिरा. *ठीकरे की मंगनी*. नई दिल्ली : वाणी प्रकाशन।
2. शर्मा, नासिरा. *शाल्मली*. नई दिल्ली : वाणी प्रकाशन।
3. शर्मा, नासिरा. *ज़िन्दा मुहावरे*. नई दिल्ली : वाणी प्रकाशन।
4. शर्मा, नासिरा. *पारिजात*. नई दिल्ली : वाणी प्रकाशन।
5. शर्मा, नासिरा. *ज़ीरो रोड*. नई दिल्ली : वाणी प्रकाशन।
6. शर्मा, नासिरा. *काग़ज़ की नाव*. नई दिल्ली : वाणी प्रकाशन।
7. शर्मा, नासिरा. *अक्षयवट*. नई दिल्ली : वाणी प्रकाशन।
8. सिंह, नीलम. “समकालीन हिंदी उपन्यास में स्त्री-विमर्श.” *हंस* पत्रिका, विशेषांक।
9. तिवारी, रमेश. *समकालीन हिंदी उपन्यास और स्त्री चेतना*. इलाहाबाद : लोकभारती प्रकाशन।
10. वर्मा, सुधा. *हिंदी साहित्य में स्त्री अस्मिता*. नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन।
11. चौधरी, प्रभा. *स्त्री-विमर्श : वैचारिक संदर्भ*. नई दिल्ली : वाणी प्रकाशन।
12. मीना, माधव प्रसाद. “नासिरा शर्मा के उपन्यासों में स्त्री चेतना.” शोध-पत्र, हिंदी साहित्य।
13. शुक्ल, रामदरश. *हिंदी उपन्यास का सामाजिक यथार्थ*. नई दिल्ली : साहित्य अकादमी।
14. भारती, नरेश. *समकालीन हिंदी कथा-साहित्य*. वाराणसी : भारतीय ज्ञानपीठ।
15. इन्फ्लिबनेट शोधगंगा. *नासिरा शर्मा के कथा-साहित्य में स्त्री विमर्श* (अप्रकाशित शोध-प्रबंध)।